International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-09-2022, Accepted: 13-10-2022, Published: 29-10-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 64-66

नर के भीतर के नारायण को बचाती कृतिः गाथा कुरुक्षेत्र की

सुनीता मिश्रा
असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, गामदेवी, मुंबई, माहराष्ट्रा, भारत

सारांश
आज के उत्तर आधुनिक युग में पाश्चात्य संस्कृति, सभ्यता हमपर इस तरह हावी हो गई है कि हम अपनी पहचान को, अपनी संस्कृति को भूलकर महत्त्वाकांक्षाओं के वन में स्वार्थ से लिप्त होकर ऐसे भटक रहे हैं कि मानव जीवन का कुछ ओर–छोर ही दिखाई नहीं देता है। आज का युवक आकाश की ऊंचाइयों को तो छूना चाहता है पर ना तो वह धर्म व कर्म की सच्ची राह से भटक गया है। वह किसी भी तरह से विजय हासिल करना चाहता है, अपना लक्ष्य साधना चाहता है फिर उसे अनैतिकता की राह से ही क्यों ना गुजरना पड़े, उसमें भी वह संकोच नहीं करता है। आज का युवक अपनी आत्मा की सच्ची आवाज नहीं सुनता वह तो केवल कुलांचे भरता किसी की परवाह किए बिना, सबको धकियाते–छकियाते तेजी से आगे बढ़ना चाहता। उसके अंदर की सम्वेदनाएं मर चुकी हैं। आज की बाजारवादी प्रवृति ने उसे उपभोक्तावादी बना दिया है फिर चाहे अपनत्व के रिश्ते ही क्यों ना हो। उसकी आत्मा में बसे नारायण ने जैसे दम तोड़ दिया है। महाभारत गीता ऐसे से भटके युवकों के लिए वरदान है जिसे समय–समय अनेक विद्वानों ने अनुवादित करके समाज तक पहुंचाने का प्रयास किया है औरमनोहर श्याम जोशी ने अपनी कृति श्गाथा कुरुक्षेत्र कीश में अत्यंत सहज–सरल रूप में इसे प्रस्तुत किया है और उसके माध्यम से आज के नर के भीतर मरते नारायण को बचाने का प्रयास किया है। इस कृति के आरम्भ में एक प्रकार सेवेदव्यास यह कहकर सचेत करते हैं कि ''जहां सत्य,धर्म, ईमानदारी, विनय और शर्म है वहीं कृष्ण हैं और जहां कृष्ण हैं वहीं विजय है।'' और अंत में सन्देश देते हुए यह भी कहते हैं कि ''धर्म से मोक्ष ही नहीं धर्म और काम भी सिद्ध होते हैं।ष इसलिए धर्म की राह पर चलकर कर्म करें परिणाम की चिता किये बिना तो इंसानियत जिंदा रहेगी और जब मानवीयता जीवित रहेगी तो हर नर के भीतर बैठे नारायण भी जीवित रहेंगे। मनोहर श्याम जोशी की कृति श्गाथा कुरुक्षेत्र कीश यही कहना चाहते हैं कि नर के भीतर का नारायण जिंदा रहेगा तो नर भी जिंदा रहेगा। आज इसकी ही आवश्यकता है वरना मानीयता के पतन के साथ –साथ मानव सभ्यता भी खत्म हो जाएगी।

मूल शब्दः नर के भीतर का नारायण, विध्यवन्सक, प्रतिबद्धता, डिस्टर्ब, आत्मवंचना, आत्मनिर्वासन, डिप्रेशन, निथुरा–निचुड़ा सत्य, आसक्ति, अपौरुषेय

प्रस्तावना

1 अगस्त 1933 को राजस्थान के अजमेर में एक प्रतिष्ठित एवं सुशिक्षित परिवार में जन्में मनोहर श्याम जोशी एक प्रमुख भारतीय साहित्यिक, विचारक, और कवि थे। उन्हें आधुनिक हिन्दी साहित्य के श्रेष्ट गद्यकार, उपन्यासकार, व्यंग्यकार, पत्रकार, दूरदर्शन धारावाहिक लेखक, जनवादी–विचारक, फिल्म पट–कथा लेखक, उच्च कोटि के संपादक, कुशल प्रवक्ता तथा स्तंभ– लेखक के रूप में जाना जाता है। उत्तर आधुनिकतावादी रचनाकार और मीडिया मैन के रूप में मशहूर लेखक मनोहर श्याम जोशी उर्फ मश्जो की पहचान हिंदी साहित्य जगत में एक उपद्रवी कथाकार और विध्वनस्क व्यंग लेखक की रही है। विद्याध्ययन तथा संचार–साधनों के प्रति जिज्ञासु भाव उन्हें बचपन से ही संस्कार रूप में प्राप्त हुआ जो कालान्तर में उनकी आजीविका एवं उनके संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का आधार बना। उन्होंने अपनी रचनाओं में विचारशीलता और सामाजिक सुधार के मुद्दे पर विचार किया है।

मश्जो का साहित्य क्षेत्र में पदार्पण एक कवि के रूप में हुआ। उन्होंने दिल्ली की नामी–गिरामी साहित्यिक संस्था ''दिल्ली कल्चरल फोरम'' (1952–53) के संपर्क में आकर अपनी प्रारंभिक कविताओं का प्रकाशन किया। उनके इसी कवि कर्म ने ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' जैसी कृति का सृजन करवाया। उसके बाद वे गद्य रचना की ओर मुड़ गए

उन्होंने गद्य विधाओं में नए ढंग से फार्म, कथ्य –चेतना तथा अनुभव दृष्टि के नए प्रयोग किए। उनकी यह नई अनुभव दृष्टि पुरानी फार्म व्यवस्थाओं, विश्वासों, संरचनाओं और प्रतिबद्धताओं को डिस्टर्ब करती हैं। आधुनिक भारतीय सांस्कृतिक नवजागरण की प्रेरणा मश्जो को महाभारत–गीता की ओर ले गई। इसी काव्यात्मक,कथात्मक प्रेरणा ने ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' में रूपाकार ग्रहण किया।

आजादी के बाद के समय का लुटा–पिटा भारतीय समाज मोहभंग, निराशा,निरर्थकता, अविश्वास, अन्याय शोषण, व अपमान की ज्वाला में जल रहा था।मूल्यहीनता पंख पसारने लगी और आजादी के बाद की पीढ़ी अकेलेपन, आत्मनिर्वासन व श्रम के परायेपन की पीड़ा के कारण डिप्रेशन का शिकार होने लगी थी। ऐसी स्थिति में मश्जो ने भारतीय समाज को भारत की विराट संस्कृति का प्रतीक महाभारत–गीता के रूप में सांस्कृतिक नवजागरण की मशाल पकड़ा दी जिसके आलोक में नयी पीढ़ी को समय के अनुसार उत्तर औपनिवेशिक दृष्टि से सम्पन्न होने की राह सुझाई और पश्चिमी आधुनिकता की घुडदौड़ में शामिल होकर आत्मवंचना से बचने व आत्मविश्वास से भरने की प्रेरणा दी। इस संदर्भ में कृष्ण दत्त पालीवाल का कथन है–

''नई पीढ़ी अन्याय अपमान शोषण के विरुद्ध कमर कसने का अरमान रख सकें। वह पश्चिमी आधुनिकता की सत्यानाशी मार से रिक्त ना हो जाए।'' 1.

वस्तुतः महाभारत सामाजिक, राजनीतिक, एवं ऐतिहासिक धरोहर है और गीता वैदिक उपनिषादिक बौद्ध और जैन इन चारों मतवादों का निचुड़ा–निथुरा सत्य ज्ञान है और यही ज्ञान श्गाथा कुरुक्षेत्र कीश विचार भूमि है तभी तो मश्जो ने वेदव्यास के द्वारा श्गाथा कुरुक्षेत्र कीश के चतुर्थ सर्ग में कहलवाया है

''उपनिषद हैं धेनु,
ग्वाले कृष्ण हैं
अमृत दुग्ध है गीता
जिसको पिलाकर प्रभु ने किया
मोहमुक्त अर्जुन को। 2. पृष्ठ 34

इस तरह मनोहर श्याम जोशी ने इस सत्य को भी स्वीकार करते हुए सामने रखा कि उपनिषद वेद से निकले हैं और गीता उपनिषदों से जो कर्म, भक्ति व मुक्ति के चिंतन भंडार से परिपूर्ण है।

आज उत्तर आधुनिकता के इस दौर में पतन के गर्क में जाती भारतीय सांस्कृति,मूल्य,मानवीयता और राष्ट्र की आत्मा युवा पीढ़ी को बचाने के उद्देश्य से मनोहर श्याम जोशी ने श्गाथा कुरुक्षेत्र कीश संकल्पना की उन्होंने मंगलाचरण में संदेश देते हुए कहा है कृ

''जहां सत्य है,
जहां धर्म है
ईमानदारी, शर्म, विनय है
वहीं कृष्ण हैं
और जहां कृष्ण हैं वहीं विजय है। 3. पृष्ठ 17

गीता धार्मिक सांस्कृतिक मूल्यों की, आदर्शों की, कर्तव्य की समुचित व्याख्या है तभी तो कर्तव्याकर्तव्य के मोह में फसे अर्जुन को गीता–ज्ञान का अमृत पिलाकर धर्म व कर्तव्य की उचित राह कृष्ण ने सुझायी।

''कर्म पर अधिकार है तेरा
किंतु है नहीं कर्म के फल पर

फल की चाह मत कर बंध कर्म के फल से। 4.पृष्ठ 32

काव्य नाटक के अंत में वेदव्यास के मुख से भी कवि ने कहलावाया है–

''कर्म करो बिना फल की चिंता किए
अर्थ, काम और गार्हस्थ्य से
अपने निश्चित कर्तव्य से
मुँह न मोड़ो। 5. पृष्ठ 71

उचित कर्म किए बिना फल की इच्छा रखने वाली महत्वाकांक्षी आज की युवा पीढ़ी के लिए यह अमृत बाण है। अहंकार व स्वार्थ की सुरा में धुत्त युवा पीढ़ी की मुक्ति का द्वार खोलती है गीता जिसे मनोहर श्याम जोशी ने श्गाथा कुरुक्षेत्र कीश के रूप में परोसा है।

आसक्ति से जन्मती कामना है
और काम से अनंतर उपजता क्रोध है। 6. पृष्ठ 33

महाभारत गीता पर टीका और भाष्य की महनीय परंपरा आदि शंकराचार्य से लेकर माधवाचार्य,सदानंद गति, नीलकंठ शास्त्री, स्वामी करपात्री जी महाराज, श्रीपाद दामोदर,वासुदेव शरण अग्रवाल जैसे मनीषियों ने अपने–अपने ढंग से व्याख्या कर कायम रखी।

भारत के हर बड़े व्याख्याता, चिंतक, दार्शनिक, समाज –सुधारक, राजनेता ने महाभारत–गीता पर टिप्पणी और भाष्य लिखा है। इतना ही नहीं महान देशभक्त बाल गंगाधर तिलक व महात्मा गांधी ने भी अपनी लेखनी महाभारत–गीता पर चलाई है।'' अनासक्ति भोग'' महात्मा गांधी द्वारा गीता पर लिखी गई व्याख्या है। मनोहर श्याम जोशी ने गीता–ज्ञान के दूध रूपी अमृत को ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' में अभिव्यक्त किया है।

आज के भारतीय जीवन में प्रगति और विकास की जो अंधी दौड़ शुरू हुई है उसमें नर के भीतर का नारायण मर रहा है मनोहर श्याम जोशी ने इस कलाकृति में नर के भीतर मरते नारायण को बचाने का संदेश दिया है, क्योंकि 20 वीं और 21वीं सदी की बढ़ती बाजारवादी, भौतिकवादी, उपभोक्तावादी, नव कंप्यूटर क्रांति की नकारात्मकता और उत्तर पूजीवादी समाज में समानता, स्वतंत्रता व बंधुता का संदेश देने वाली आधुनिकता एक विध्वंसक धोखा है, इस धोखे ने फिर से एक महाभारत शुरू कर दिया है जिससे बचाने व बचने के लिए गीता– ज्ञान जैसा बौद्धिक आलोचनात्मक विवेक चाहिए और किसी भी कीमत पर नर के भीतर के नारायण को जीवित रखना है क्योंकि नारायण कृष्ण के श्कृषश का अर्थ है कृजोतना,खींचना,आवरण हटाना और श्णश्का अर्थ हैकृ निवृत्ति (विद्यानिवास मिश्र –महाभारत का काव्यार्थ)।कृष्ण जीवन की सर्जनात्मकता की सृष्टि है इससे बंजरता टूटती है,नष्ट होती है,इसी दृष्टि से कृष्ण भाव जीवन का लघु–महत दोनों रूप है और ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' के भीष्म इसी रूप में कृष्ण की आराधना करते हैं,किंतु आज की वह भोगवादी संस्कृति के पीछे भागते मनुष्य ने स्वयं अपने जीवन में दुखों को निमंत्रण दिया है क्योंकि आज का मानव तप के तेल से सत्य का दीपक जलाना भूल गया है, करुणा की बत्ती में क्षमा की लौ उठाना छोड़ चुका है,इसलिए आज के मानव के सामने मूल्यांधता है और वह इस अंधकार में भटकने के लिए विवश है। उसकी इस विवशता के पीछे गांधारी का कृष्ण को दिया श्राप है जो कृष्ण को कुरुवंश की उपेक्षा का कारण मान शाप देती है कि तुम्हारे भी कुटुंबी आपस में लड़ कर मर जाएंगे और आज का भारत गांधारी का वही शाप भोग रहा है। इस प्रकार मनोहर श्याम जोशी ने महाभारत गीता के श्टेक्स्टश को आज के आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत किया है।

वस्तुतः महाभारत गीता जीवन जीने की कला सिखाती है,जीवन को एक नए सलीके से जीने की मानसिक तैयारी करती है और जीवन जीने की इसी तरह की प्रेरणा ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' के माध्यम से मनोहर श्याम जोशी ने दी है,क्योंकि महाभारत के चरित्र भारतीय जनमानस की प्रेरणा के स्रोत रहे हैं, तभी तो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ''हिंदी साहित्य '' की भूमिका में महाभारत को उज्जवल चरित्रों का वन घोषित करते हुए कहा है कृष्महाभारत को उज्जवल चरित्रों का वन कहा जा सकता है।वह कवि रूपी माली का यत्न पूर्वक सवारा उद्यान नहीं है जिसके प्रत्येक लता, पुष्प, वृक्ष अपने सौंदर्य के लिए बाहरी सहायता की अपेक्षा रखते हैं बल्कि वह अपने आप को जीवनी शक्ति से परिपूर्ण वनस्पतियों और लताओं का परिवर्तित विशाल वन है जो अपनी उपमा आप ही हैं। मूल कथानक के सभी चरित्र अपने आप में पूर्ण हैं। भीष्म जैसा तेजस्वी और ज्ञानी, कर्ण जैसा गंभीर और वदान्य, द्रोण जैसा योद्धा, कुंती और द्रौपदी जैसी तेजोदीप्त नारियां,गांधारी जैसी पति परायण और श्री कृष्ण जैसा उपस्थित बुद्धि और गंभीर तत्वदर्शी, युधिष्ठिर जैसा सत्य परायण, भीम जैसा मस्त मौला, अर्जुन जैसा वीर, विदुर जैसा नीतिज्ञ चरित्र अन्यत्र दुर्लभ है।'' 7.पृष्ठ 7

मनोहर श्याम जोशी ने जी महाभारत के इन्हीं उज्जवल चरित्रों की उज्जवल गाथा को ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' कलाकृति के रूप में बुना है। उन्होंने कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास के ह्रदय में बैठकर महाभारत के चरित्रों की वृक्ष रूप में अवधारणा को मथा है और काव्यार्थ को वृक्ष से जोड़ा है।इसके विचार–प्राण के दो महावृक्ष हैं, एक दुर्योधन नामक क्रोध का महावृक्ष है जिसका तना कर्ण है और शकुनि उसकी शाखा है, दुशासन इस वृक्ष का पुष्प व फल है और अंधा,अविवेकी राजा धृतराष्ट्र इस वृक्ष की जड़ है। दूसरा महावृक्ष युधिष्ठिर है जो धर्म, कर्तव्य, करुणा व विवेक से परिपूर्ण है। इस वृक्ष का तना अर्जुन है और इसकी शाखा महाबली भीम है, नकुल–सहदेव इस वृक्ष के पुष्प और फल हैं तथा इस वृक्ष की जड़ योगिराज श्री कृष्ण है जिनमें समस्त जाति स्मृतियों,अपौरुषेय ज्ञान तथा कर्तव्य विधान समाया हुआ है और वे आसक्ति,अनासक्ति से परे रहने वाले नारायण हैं जो नर को जगाते हैं नवजागरण लाते हैं।

इतना ही नहीं मनोहर श्याम जोशी ने ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' में स्त्री– विमर्श का एक नया पाठ भी प्रस्तुत किया है।आजादी के बाद के परिदृश्य में आधुनिक चेतना से युक्त यह स्त्री–विमर्श उत्तर आधुनिक परिदृश्य का एक नया वातायन है। विचार संघर्ष के उठते ज्वार–भाटे में एक प्रश्न यह भी उठा है कि स्त्री कोई संपत्ति नहीं जिसे जुए में दांव पर लगा दिया जाए वह भी बिना उसकी मर्जी के बल्कि स्त्री जीवन की प्रकृति है,ऊष्मा है, राग है और उसकी अपनी स्वतंत्र अस्मिता है।स्त्री अस्मिता को ठुकराने वाली, नीच कर्म में प्रवृत्त, अन्यायी मर्दवादी समाज के ऐसे कर्म पर अंकुश लगाने की आवश्यकता है, तभी तो द्रौपदी युधिष्ठिर के कौरवों से संधि प्रस्ताव का प्रतिवाद करती है।

जाते जाते कृष्ण सुन लो मुझ द्रोपदी की बात
संधि जो भी कर रहा स्वीकार, है धिक्कार उसको।
युधिष्ठिर के धर्म को, भीम के भुजदंड को
अर्जुन के गांडीव की टंकार को धिक्कार है। 8.पृष्ठ 22

इस तरह जहां एक ओर द्रौपदी मर्दवादी सोच को चुनौती देती है वहीं दूसरी ओर शिखंडी भारत के कई भीष्मों की वीरता पर वज्रपात करता है और कुंती वरण की स्वतंत्रता को व्यक्त करती है तो गांधारी स्त्री की सहमति पर, उपेक्षा पर करारा जवाब है।मनोहर श्याम जोशी ने उपर्युक्त तीनों ही नारी चरित्रों से के माध्यम से ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' में स्त्री–विमर्श को नए रूप में देखते हुए एक नया पाठ प्रस्तुत किया है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति में, साहित्य में और परंपरा में नारी सदा दोयम दर्जा ही प्राप्त करती रही है, यहां तक कि रामायण और महाभारत के सभी नारी चरित्र नियति के हाथ संचालित रहे हैं। ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' में मनोहर श्याम जोशी ने स्त्री –विमर्श के नए रूप से नारी की आधुनिक चेतना को जगाया है।

मनोहर श्याम जोशी ने ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' में वेदव्यास को सूत्रधार के रूप में प्रस्तुत कर एक नया प्रयोग भी किया है। वह इस काव्य नाटक में आद्यंत उपस्थित हैं। इनके द्वारा मनोहर श्याम जोशी ने ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' कलाकृति में एक नया भाष्य और व्याख्या प्रस्तुत की है।वेदव्यास कुरुक्षेत्र में घटने वाली प्रत्येक उस घटना के प्रति आह से कराह उठते हैं जो मानवता को शर्मसार करने वाली है और जिससे मानवता को प्रेरणा मिलने वाली है उसके प्रति वे अभिभूत हो उठते हैं। कथा सूत्रधार के रूप में वे ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' को एक नई अर्थवत्ता देते हुए कहते हैं–

मैं वेदव्यास
पुत्र मुनि पारासर का
वीर्य से जिसके विचित्रवीर्य की दो विधवाएं
दे सकीं जन्म धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर को
भरत वंश जिससे बढ़ सका आगे। 9.पृष्ठ 18

वस्तुत

मनोहर श्याम जोशी और वेद व्यास इसी कुरुक्षेत्र की विभीषिका से नाभि–नाक से संबद्ध रहे हैं। जहां एक ओर मनोहर श्याम जोशी द्वितीय विश्वयुद्ध की विध्वंसक त्रासदी और उससे उत्पन्न संहार के साक्षी बने, वही वेदव्यास महाभारत की विभीषिका के न सिर्फ साक्षी बने बल्कि महाभारत की कथा को रूप–आकार प्रदान किया और जब–जब भी महाभारत में अनीति, अनर्थ, कुचक्र, नारी की शील हरण की कोशिश की गई तब–तब वह आह से मर्माहत होते रहे।

दरअसल महाभारत समस्त भारतीय संस्कृति और साहित्य का स्रोत–ग्रंथ और आधार रहा है। इसे आधार बनाकर भारतीय साहित्य में काव्य–नाटक, उपन्यास, चंपू –काव्य, प्रबंध–काव्य तथा लंबी कविताएं लिखी गईं और मानव जीवन को समाज को जागृत करती रहीं, प्रेरित करती रहीं। हिंसा या युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं अहिंसा व धर्म पर चलकर मोक्ष,अर्थ और काम भी सिद्ध होते हैं। ''गाथा कुरुक्षेत्र की'' के अंत में वेदव्यास यही सीख देते हुए कहते हैं

''धर्म से मोक्ष ही नहीं,अर्थ व काम भी होते हैं
सिद्ध
इसलिए सदा सेवन करो धर्म का ही.
किसी भय से,कामना से,लोभ से
और तो और प्राण रक्षा के लिए भी
त्याग धर्म का करो मत तुम। 10 पृष्ठ 72

तभी नर के भीतर बसे नारायण को बचाया जा सकता है। यही संदेश जन–जन तक पहुंचाना मनोहर श्याम जोशी की इस कलाकृति का उद्देश्य रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. गाथा कुरुक्षेत्र की, मनोहर श्याम जोशी
2. गाथा कुरुक्षेत्र की भूमिकाः 1
3. वही'' '''' : 2. पृष्ठ 34
4. वही '' '' 3. पृष्ठ 17
5. वही '' 4. पृष्ठ 32
6. वही '' 5. पृष्ठ 71
7. वही '' 6. पृष्ठ 33
8. वही '' 7. पृष्ठ 07
9. वही '' 8. पृष्ठ 22
10. वही '' 9. पृष्ठ 18
11. वही '' 10. पृष्ठ 72